AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

पर्यावरण में नैतिकता का भौगोलिक अध्ययन

डॉ. कुबेर सिंह गुरु पच, प्राचार्य
देव संस्कृति कॉलेज ऑफ एजुकेशन एंड टेक्नोलॉजी, खपरी, दुर्ग,
छत्तीसगढ़, भारत

शोध सार

वर्तमान परिदृश्य में प्रकृति में संतुलन बनाये रखना आवष्यक है। समय के विकास के साथ आधनिकता के इस दौर में प्रकृति के विभिन्न संसाधनों का अंधाधुन प्रयोग हो रहा है। जिससे पर्यावरण प्रदुषण, तो बढ़ ही रहा है साथ ही प्राकृतिक संतुलन भी बिगड़ राहा है। अतः वर्तमान स्थिति में हमें जागरूक होकर नैतिकता के साथ जिम्मेदारी से प्रकृति को संरक्षित करना होगा। उसकी गुणवत्ता को बनायें रखना होगा तभी हम एक स्वच्छ वातावरण में अपना जीवन यापन कर पायेगें।

मुख्य शब्द

पर्यावरण, नैतिकता, संसाधन, प्रदुषण, संरक्षण।

प्रस्तावना

आज वर्तमान परिस्थिति में पर्यावरण का संतुलन बनाये रखना आवश्यक हो गया है। मानव की भौतिकवाद प्रवृतियों ने पर्यावरण को बिगाड़ दिया है। जैसे–जैसे समय का विकास हुआ वैसे–वैसे पर्यावरण मे नैतिकता की आवश्यकता महसूस हुई। भारत भूमि की संस्कृति में प्राचीन युग से आधुनिक युग तक किसी न किसी रूप में हम प्रकृति पर निर्भर है। पर्यावरण पृथ्वी पारिस्थिति प्राकृतिक संसाधनों, वन एवं वन्य जीव ऊर्जा पर्यावरण प्रदूषण पर्यावरण प्रबंधन पर्यावरण संरक्षण एवं पर्यावरण संरक्षण सभी में नैतिकता को ध्यान में रखना है। पर्यावरण से मानव जीवन एवं अन्य प्राणी विभिन्न प्रकार के वृक्ष, वन्य जीव आदि का भरन पोषण निर्भर है।

अतः वर्तमान में पर्यावरण को समझने तथा उसकी बाधाओं को दूर कर उसे संतुलित एवं जन उपयोगी बनाने हेतु मनुष्य को अपने दृष्टिकोण को लक्ष्य केन्द्रित तथा परिणाम केन्द्रित करना होगा और अंतिम उपलब्धि पर्यावरण की गुणवत्ता रखना होगा, इसी से जीवन की गुणवत्ता हो सकती हैं।

उदेश्य

पर्यावरण में नैतिकता को बनाये रखने के लिए निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन आवश्यक है:

1. पर्यावरण के प्रति जागरुकता विकसित करना।
2. पर्यावरण आचार संहिता का विकास करना।
3. पर्यावरण सुधार।
4. बढ़ती आबादी पर नियंत्रण।

स्वच्छ पर्यावरण की सुखद कल्पना को साकार करना, पर्यावरण समस्याओं को प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धि और उचित उपयोग वायु जल भूमि और उनकी प्रदूषण निवारण कर, पर्यावरण कानूनी पर्यावरण साहित्य

का निर्माण और उनका वितरण, पर्यावरण के छहतारा में शोध के माध्यम से कम व्यय वाली तकनीक का विकास करके नैतिकता को बढाया जा सकता है। जब से मानव पर विकास हुआ है तब से उसकी रहने की स्थिति उपलब्धि आवश्यक वस्तुए वांछित सुविधाए और उसके जीवन की इच्छा तथा आकांक्षाओं में बहुत असमानता है। पिछले कुछ दशकों से जीवन की गुणवत्ता की चर्चा हो रही है और इसी चर्चा से पर्यावरण गुणवत्ता की चर्चा हो रही है। पर्यावरण अध्ययन का मुख्य उद्देश्य बच्चो को अधिक प्राकृतिक सूचना प्रदान करना जिससे पर्यावरनीय अवधारणा कौशल और मूल्यों के संतुलन को समझे। मानव जीवन भौतिक और सांस्कृतिक आवश्यकताओं की पूर्ति जिससे होती है वह संसाधन कहलाती है।

पर्यावरण के क्षेत्र मे मनुष्य की नैतिक भूमिका

मनुष्य के अनैतिक आचरण से जहां प्यावरण सहित सभी क्षेत्रों में हास हुआ है वही अच्छे आचरण और सामाजिक स्वीकृति से किये जाने वाले व्यावहारिक क्रियाकलापों से आशाहीत उत्थान हुआ है, निम्न कार्यकलारपों में मनुष्य की भूमिका की समेकित प्रयास किये जाने की आवश्यकता हैः

1. मनुष्य को वैकल्पिक ईधन के उपयोग के लिए तैयार करना।
2. मनुष्य के इच्छाओं को रोक लगाना।
3. प्रकृति में संतुलन के लिए वन सुरक्षा एवं वृक्षारोपण पर बल देना।
4. पर्यावरण को संतुलित बनाये रखने के लिए मनुष्य को उन्नत तकनीकों का उपयोग करना चाहिए जो विनाश राहित विकास पर आधारित हो।
5. अधिक आबादी को रोकना आवश्यक है। वन्य जीवो का संख्या में कमी, जलवायु परिवर्तन, वर्षा की मात्रा में कमी आदि हुआ है। अतः मनुष्य को अपने मानस मे परिवर्तन करना होगा।
6. मनुष्य को धुँआ रहित चूल्हे उपल्बध कराने चाहिए तथा रसोई घर में खिडकी और रोशनदान की व्यवस्था होनी चाहिए।

नैतिकता हास के संभावित कारण

1. व्यक्तिगत स्वार्थपरता
2. लालच
3. आलस्यः अजगर करे न चाकरीए पंछी करे न काम।
   दास मलूका कह गयेए सबके दाता राम।।
4. कठोर परिश्रम के प्रति उदासीनता।
5. राष्ट्रीय भावना में कमीं।
6. दूसरो से तुलना करने की होड।
7. बुरी संगत ।
8. भविष्य की अनदेखी ।
9. आत्मविश्वास और इच्छा शक्ति में कमी।

नैतिकता और पर्यावरण

पर्यावरण के क्षेत्र में आज चिंतन करने की दिशा को 4 भागो में विभाजित की गई है। पर्यावरण सरंक्षण, पर्यावरण सुरक्षा, पर्यावरण प्रदूषण, पर्यावरण सुधार इन 4 विभाजनो के आधार पर अंर्ताराष्ट्रीय संस्थाएं, राष्ट्रीय संस्था, और केंद्र सरकार, राज्य स्तरीय संस्था, और सामाजिक नेता सभी उचित सुरक्षा, सुधार और प्रबंध के लिए कार्य कर रहे है। इन सभी में व्यावहारिक क्रियान्वयन केवल मनुष्य द्धारा किया जाता है।

नैतिकता के विकास के लिए उपाय

नैतिकता एक कठिन कार्य है, यह सरकार प्रेरित है। अच्छी संगति से अच्छा नागरिक बन सकता है। इससे जीवन मूल्यो के प्रति आस्था होगी, अच्छी आदतो का निर्माण होगा। आदर्श पुरूषो की जीवनियां पठनीय साहित्य

से आदर्श व्यक्तित्व का चित्रण प्रस्तुत होगा।

संदर्भ पुस्तक सूची

1. पर्यावरण अध्ययनए डॉ दया शंकर त्रिपाठी।
2. पर्यावरण अध्ययन, डॉ रतन जोशी साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा।
3. पर्यावरण प्रदूषण और हम एक संक्षिप्त परिचय, प्रतिभा सिंह।
4. पर्यावरण प्रदूषण एक अध्ययन, डॉ रविंद्र कुमार।
5. पर्यावरण भूगोल, डॉ एच एम सक्सेना, पूजा सक्सेना, रावत पब्लिकेशन, जयपुर।
6. पर्यावरण प्रदूषण एवं प्रबंधन, श्री शरण, कु अशोक प्रधान।
7. पर्यावरण एवं मानव जीवन, डॉ सुमन गुप्ता, लोकप्रिय विज्ञान सीरीज।
8. पर्यावरण भूगोल, प्रो सविन्द्र सिंह, वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर उत्तरप्रदेश।
9. पर्यावरण शिक्षा, एम के गोयल अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा।

——==00==——